महादेवी वर्मा को खरसिया कॉलेज के हिन्दी विभाग ने किया याद

स्नातकोत्तर हिन्दी साहित्य परिषद शासकीय महात्मा गांधी महाविद्यालय खरसिया के द्वारा दिनांक 26 मार्च 2022 को हिन्दी विभाग में महादेवी वर्मा की जयंती मनायी गई। विभागाध्यक्ष हिन्दी डॉ0 रमेश टण्डन के दिशा निर्देशन तथा परिषद प्रभारी प्रो0 जयराम कुर्रे की अध्यक्षता में विभागीय छात्रों ने जयंती मनाते हुए छायावाद की कवयित्री महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व पर चिंतन किया। माँ शारदे की पूजा के उपरान्त, महादेवी वर्मा के छायाचित्र पर माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम के दौरान गायत्री डनसेना एवं कौशिल्या गबेल ने राज्य गीत की प्रस्तुति भी दी। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो0 कुर्रे ने महादेवी के जीवन दर्शन और वियोग पक्ष को छात्रों के समक्ष रखा। प्रो0 दिनेश संजय ने भी 26 मार्च 1907 को अवतरित महादेवी वर्मा की कविताओं के मर्म को उजागर किया। दोनों ही वक्ताओं ने आधुनिक काल की मीरा की काव्यगत विशेषताओं को पूरी विद्वता के साथ श्रोता छात्र तक पहुँचाया। महादेवी वर्मा के संबंध में डॉ0 नगेन्द्र ने कहा है, ''महादेवी का एकाकी जीवन ही उनके वेदनाभाव का मूल प्रेरक है। निस्संदेह इन्हें दुःख का आधिक्य किसी अभाव के कारण ही मिला है। किसी प्रिय वस्तु के अभाव के कारण ही ये 'नीर भरी दुःख की बदली' बन गई। विफल प्रेम और मर्म प्रभाव ही महादेवी की कविता में सर्वत्र प्रतिध्वनित हो रहा है। हो सकता है जीवन की मधुमय बेला में प्रियतम का त्याग ही इसका कारण रहा हो।'' अपनी प्रथम कृति **'नीहार'** के संबंध में महादेवी लिखती हैं कि 'नीहार' के रचना काल में मेरी अनुभूतियों में वैसी ही कौतूहल मयी वेदना उमड़ आती थी, जैसी बालक के मन में दूर दिखाई देने वाली अप्राप्य सुनहली उषा और स्पर्श से दूर और सजल मेघ के प्रथम दर्शन से उत्पन्न हो जाती है।'' कवयित्री के लाज के बोल भी नहीं फूटे थे, प्रियतम के स्वरूप का बोध भी नहीं हुआ था; इस दशा में वियोग की पराकाष्ठा पर पहुँचकर कवयित्री को पूरा विश्व वेदनामय प्रतीत होने लगा था –

''अपने इस सूनेपन की
मैं हूँ रानी मतवाली,
प्राणों का दीप जलाकर
करती रहती दीवाली।''

प्रथम कृति **'नीहार'** में प्रत्येक वस्तु कुहासे से ढकी होने के कारण धूमिल और अस्पष्ट होती है। किन्तु प्रातःकाल हो जाने से **'रश्मि'** के प्रकाश में वही वस्तु प्रकट हो जाती है। इस कृति में कवयित्री को वेदना से विशेष आत्मीयता हो जाती है। रश्मि तक आते–आते विरह–वेदना ही कवयित्री का अंतिम लक्ष्य बन जाती है। 'रश्मि' के बाद की दो कृतियों – **'नीरजा'** और 'सांध्यगीत' का स्वर एक जैसा है। इनमें वेदना से आनन्द की अनुभूति होने लगती है। कवयित्री दुःख के रूप में ही प्रियतम का आह्‌वान कर रही है –

''तुम दुःख बन इस पथ से आना ?
शूलों में नित मृदु पाटल–सा, खिलने देना मेरा जीवन,
क्या हार बनेगा वह, जिसने सीखा हृदय को बिंधवाना।''

महादेवी ने वेदना को आनन्द से सर्वथा ऊँचा स्थान दिया है। **'सांध्यगीत'** में महादेवी का साथी केवल अन्धेरा ही है –

''शून्य मेरा जन्म था, अवसान है केवल सवेरा।''

इसमें महादेवी की विचारधारा को एक नई दिशा मिल गई है। प्रियतम के साथ तन्मयता ही उसकी दार्शनिक परिणति है और आत्मविश्वास तथा विरह वेदना की दृढ़ता ही उसका संबल है। **'दीपशिखा'** में अद्वैतता तथा विश्वास का और निखार हो गया। पीड़ा की ज्वाला ही दीपशिखा बन गई। इसमें दुःख अपना दर्शन खोजकर सुख को आत्म समर्पण कर बैठा है।

विभागीय शिक्षक–अतिथि व्याख्याता डॉ0 आकांक्षा मिश्रा के कुशल मंच संचालन में सम्पन्न इस जयंती का ज्ञान लाभ सुश्री साक्षी देवांगन अतिथि व्याख्याता गणित सहित विभागीय छात्र – धनंजय जायसवाल, प्रियंका पटैल, प्रिया महंत, नमिता, भारती, सूरज, नीरज, लोकनाथ, ज्ञानेश्वर, सुषमा, नम्रता, रेशमा, अनिल, सोनिया आदि छात्रों को मिला।

महादेवी वर्मा जयंती
26.03.2022
26/03/2022 11:15

अमृत संदेश

महादेवी वर्मा को खरसिया कॉलेज के हिन्दी विभाग ने किया याद

खरसिया। स्नातकोत्तर हिन्दी साहित्य परिषद शासकीय महात्मा गांधी महाविद्यालय खरसिया के द्वारा दिनांक 26 मार्च 2022 को हिन्दी विभाग में महादेवी वर्मा की जयंती मनायी गई। विभागाध्यक्ष हिन्दी डॉ. रमेश टण्डन के दिशा निदेर्शन तथा परिषद प्रभारी प्रो. जयराम कुर्रे की अध्यक्षता में विभागीय छात्रों ने जयंती मनाते हुए छायावाद की कवयित्री महादेवी वमा के व्यक्तित्व व कृतित्व पर चिंतन किया। माँ शारदे की पूजा के उपरान्त, महादेवी वमा के छायाचित्र पर माल्यापर्ण किया गया। कायर्क्रम के दौरान गायत्री डनसेना एवं कौशिल्या गबेल ने राज्य गीत की प्रस्तुति भी दी। विभागीय शिक्षक अतिथि व्याख्याता डॉ. आकांक्षा मिश्रा के कुशल मंच संचालन में सम्पन्न इस जयंती का ज्ञान लाभ सुश्री साक्षी देवांगन अतिथि व्याख्याता गणित सहित विभागीय छात्र धनंजय जायसवाल, प्रियंका पटैल, प्रिया महंत, नमिता, भारती, सूरज, नीरज, लोकनाथ, ज्ञानेश्वर, सुषमा, नम्रता, रेशमा, अनिल, सोनिया आदि छात्रों को मिला।